छायावादी कवियों के काव्य में प्रकृति चित्रण

प्रा. डॉ. गिरि. डी. व्ही

स्वामी विवेकानंद वरिष्ठ महाविद्यालय,मंठा

हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन हुआ है। वह उस काल की परिस्थितियो के अनुसार उसका विभाजन हुआ,जैसे आदिकाल या विरगाथा काल,भक्तिकाल या सुवर्णयुग काल, रितिकाल या श्रृंगार काल और आधुनिक काल यह कालों का निर्माण किया गया आदिकाल या विरगाथा काल यह नामकरण उस समय की जो प्रवृत्तिया मुख्य रुप से रही उनके अनुसार इसका नामकरण किया गया जैसे इस समय युध्दों की भरमार थी ,युध्दों का ज्यादा तर वर्णन होने के कारण इसका नामकरण विरगाथा काल हो गया । भक्तिकाल में हमें संतसाहित्य ज्यादातर दिखाई देता है वैसे रितिकाल में श्रृंगारपरक रचनाऐ ज्यादात्तर दिखाई देती है वैसे ही आधुनिक काल में परिवर्तन होकर इस में भारतेंदू यूग,व्दिवेदी युग,छायावाद , प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता ऐसे कई भाग देखने को मिल जाते है।

आधुनिक काल का ही एक भाग छायावाद है। सन 1920 से 1936 तक के कालखंड को छायावाद के नाम से जाना जाता है। यह आधुनिक हिंदी कविता की एक समृध्द परंपरा है। पं रामचंद्र शुक्ल के मतानुसार ''छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थो में समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका सम्बध काव्य से होता है तथा काव्यशैली विशेंष के अर्थ में तुरीयावस्था में अनुभुत रुपात्मक आभास को युरोप में छाया फैन्टासमा कहते है। इसी बंगाल के ब्रम्हसमाज के बीच उक्त वाणी के अनुकरण पर जो अध्यात्मिक गीत या भजन बनते थे,वे छायावाद कहलाने लगे। धीरे – धीरे यह शब्द धार्मिक क्षेत्र से वहाँ के साहित्यिक क्षेत्र में आया और फिर रवीन्द्र बाबू की गीतांजली की धूम मचने पर हिंन्दा के साहित्य क्षेत्र में भी प्रकट हुआ।''

छायावाद के कुछ प्रमुख कवि जो प्रमुख चार स्तंभ माने जाते है उनमे प्रमुख रुप से सुमित्रानंदन पंत,जयशंकर प्रसाद,सुर्यकांन्त त्रिपाठी 'निराला',महादेवी वर्मा यह चार प्रमुख रहे है। जिन्होंने अपने काव्य और रचनाओं के माध्यम से छायावाद को समृध्द करने का काम किया है। इनकी रचनाओं में,प्रकृति चित्रण,वैयाक्तिकता,सौदर्य बोध,नारी चित्रण,रहस्यानूभूती,वेदना और निराशा,देशप्रेम,मानवतावाद बौध्दिकता यह विशेषताएँ विशेष रुप में दिखाई देती है। लेकिन प्रकृति चित्रण छायावाद की एक अन्यतम प्रवृत्ति रही है। छायावादी कवियों ने वीर,भक्ति,श्रृंगार,नीती,राष्ट्रियता और सामाजिकता की सीमा को लांघकर स्वच्छंद प्रेम और प्रकृति को काव्य विषय के रुप में स्वीकार किया इससे पूर्व हिंन्दी साहित्य में प्रकृति चित्रण हुआ है, परंतु शुध्द प्रकृति चित्रण की परंपरा द्विवेदी युग से शुरु हुई और छायावादी काव्य में प्रकृति सुक्ष्म रुप में प्रकट हुई। कवियों ने प्रकृति के माध्यम से अपने आन्तरिक भावों को अनुभूतियों को व्यक्त किया। प्रकृति उनके लिए साध्य भी है और साधन भी। इस काव्य में प्रकृति पर चेतनता का आरोप (मानवीकरण) किया गया है। प्रसाद पंत निराला,महादेवी वर्मा आदि छायावाद के प्रमुख कवियों ने प्रकृति का नारी रुप में चित्रण किया है और सौंदर्य एवं प्रेम की अभिव्यक्ति की है। जैसे –

> ''पगली हां संभाल ले कैसे छूट पडा तेरा अंचल
>
> देख विखरती है मणिराजी अरी उठा बेसुध चंचल।''

छायावादी कविने निजी अनुभूतियों को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया है। जैसे – ''मै नीर भरी दुःख की बदली।'' छायावादी कवियों के लिए प्रकृति की प्रत्येक छवि विस्मयोत्पादक बन जाती है। वह प्रकृति पर विमुग्ध होकर रहस्यात्मकता की ओर उन्मुख हो जाता है।जैसे–

> ''मै भूल गया निज सीमाएँ जिसमें
>
> वह छवि मिल गई मुझे।''

प्रकृति–चित्रण की वजह से छायावाद को स्वच्छन्दता वाद समझा जाता है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को अनेक रुपों में चित्रण किया है,आलंबन रुप में, उद्यीपन रुप में जैसे निराला की संध्यासुंदरी देखीएँ–

'' दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या सुंदरी परी सी

धीरे धीरे धीरे।''

सुमित्रानंदन पंत – प्रकृति में चेतना के आरोप को छायावाद कहते है। इस दृष्टि से पंत जी को छायावादी कवि कहते है। सच पूछिए तो,छायावाद,प्रकृति वर्णन का ही एक प्रकार है। अब तक कवियों ने प्रकृति को अपने दृष्टिकोण से देखा था, पंत जी ने उसे निरपेक्ष दृष्टि से देखा, अब तक उसे जड़ समझा जाता था, पंत जी ने चेतन माना, अब तक किसी न किसी प्रकार मानव जीवन से सम्बध्द करके रखा गया था, पंत जी ने उसके जीवन को अपने में पूर्ण और स्वतंत्र घोषित किया। वीणा से लेकर कला और बूढ़ा चाँद तक उनके समस्त ग्रंथ प्रकृति प्रेम के परिचायक है। वीणा में छाया,अंधकार,सरिता,निर्झर,लता उषा और विहाग पर छोटी–छोटी रचनाएँ पायी जाती है। इस ग्रंथ में स्वयं को कवि ने एक बालिका के रुप में चित्रित किया है और प्रकृति को सजीव मानकर उससे अनेक प्रकार के प्रश्न किए है।वीणा का कवि पहले प्रकृति के प्रति जिज्ञासा भावना लेकर चलता है फिर उसके गुणों पर मुग्ध होकर उनका अनुकरण करना चाहता है और अंत में उसमें डूबकर उससे तादात्म्य स्थापित करना चाहता है। ''पल्लव–प्रकृति की चित्रणशाला है। पल्लव में किसी वस्तु के प्रति जितनी भी कल्पनाएँ संभव हैं , कवि ने सब कर ली है। उपमाओं की तो वहाँ जैसे झड़ी लगा दी है। यहाँ प्रकृति के सम्पर्क में आकर बड़े भारी आनन्द का अनुभव कवि करता है।

बाँसो का झुरमुट –

संध्या का झुटपुट –

है चहक रही चिड़ियाँ

टी–वी–टी –टुट्–टुट् !

पंत जी के काव्य में भावना की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से हुई है, अत : इन्हें प्रकृतिमूलक रहस्यवादी कहाँ जा सकता है। अध्यात्म चिंतन के कई पक्ष हो सकते है। एक यह कि ईश्वर में केवल विश्वास हो,दुसरा यह कि उसे एक शक्ति मानकर उससे प्रार्थना की जाय और तीसरा यह कि उससे कोई सबंध स्थापित कर उसके प्रति प्रेम का अनुभव किया जाए।पन्त जी ने अपने काव्य में कही–कही उससे प्रेम का सम्बध स्थापित किया है और बड़ी कोमलता के साथ उस सबंध की अभिव्यक्ति की है निराश होने पर कही–कही मृदु उपार्लभ भी उन्होंने दिए हैं। जहाँ तक दुसरी ओर का सबंध है उसका आभास पल्लव की ''मौन निमंत्रण'' रचना में मिलता है–

देख वसुधा का यौवन–भार

गुंज उठता है जब मधुमास

विधुर उर के से मृदु उद्गार

कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छ्वास,

न जाने सौरभ के मिस कौन

संदेशा मुझे भेजना मौन!

इस प्रकार पंत जी के काव्य में प्रकृति–चित्रण देखने को मिलता है।

4) जयशंकर प्रसाद–छायावाद के प्रमुख आधारस्तंभ में से एक माने जाते है। प्रकृति के प्रति अनुराग तो इनकी सभी रचनाओं में समान रूप से झलक पड़ता है। इनकी रचनाओं में कही वीरता व्यंजना है, कही प्रेम का महत्व प्रतिपादित है,कही देश प्रेंम की झलक पायी जाती है और कहीं सौंदर्य चेतना को उद्बुध्द किया जाता है। गीति काव्य के अंतर्गत प्रसाद के तीन ग्रंथ आते है–कानन कुसुम,झरना और लहर इसमें प्रसाद जी के प्रकृति प्रेम का परिचय मिलता है। कानन–कुसुम तो जैसे प्रकृति का क्रीड़ा स्थल ही है।इसमें कुछ रचनाएँ ऋतु–सबंधी है। ऋतुओं में ग्रीष्म,वर्षा,शरद,वसंत सभी का वर्णन है। कुछ रचनाएँ स्वतंत्र विषयो को लेकर है। जैसे सभी ने वैसे ही प्रसाद जी ने भी फूल और पक्षी ,नदी और समुद्र ,रात और प्रभात आदि को अपने काव्य का विषय बनाया है। प्रकृति के साथ पुरुष की कल्पना प्रसाद ने अपने काव्य में की है। वे प्राकृतिक वस्तुओं के रूप–रंग का ही विवरन नही देते,उससे उत्पन्न होने वाले मनोभावों का ही वर्णन नही करते,बल्कि प्रकृति की आत्मा का भी चित्रण करते है।

बीती वीभावरी जाग री!

अंबर पनघट में डुबो रही –

तारा – घट ऊषा नागरी।

खग कुल कुल–कुल सा बोल रहा,

किसलय का अंचल डोल रहा,

लो,यह लतिका भी भर लाई

मधुमुकुलनवल रस गागरी।

या प्रकृति का दूसरा चित्र देखिए –

जलधि,मै न कभी चाहती

कि तुम भी मुझ पर अनुक्त हो

पर मुझे निज वक्ष उदार में

जगह दो, उसमें सुख से रहें।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला ' –निराला जीने बहुत सारी रचनाओं का निर्माण किया उनकी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं का चित्रण देखनें को मिलता है,ऐसी उनकी कई रचनाएँ है। उनकी कई रचनाओं में प्रकृति का चित्रण भी देखने को मिलता है। इनका सबसे प्रिय विषय 'बादल' सबसे प्रिय ऋतु वर्षा। प्राकृतिक तत्वों में जल के प्रति इनका आकर्षण अधिक है। तरंग, प्रपात और नदी पर जो रचनाएँ पायी जाती है, वे इस आकर्षण की पुष्टि करती है। फुलों पर लिखी गयी इनकी सभी रचनाएँ प्रसिध्द है। जैसे ' जुही ' शेफालिका ,' बेला ' नर्गिसा ' जुही की कली ' इनकी पहली रचना है जिसके माध्यम से इन्हौंने प्रकृति के तत्वों के बीच उन्मुक्त प्रेम की स्थापना की है सब इसमें जूही नारी है, पवन पुरुष –

निर्दय उस नायक ने

सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली

मसल दिए गोरे कपोल गोल।

प्रकृति वर्णन की दृष्टि से कुकुर मुत्ता एक साधारण रचना है। इसमें कुकुर मुत्ता की तुलना में गुलाब को हेय सिध्द किया गया है। इस तरह निराला जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रकृति का चित्रण किया है।

महादेवी वर्मा – आधुनिक हिन्दी काव्य की 'मीरा ' कही जानेवाली तथा छायावादी कवि चतुष्टय की अंतिम अंग मानी जानेवाली श्रीमती महादेवी वर्मा का काव्य वेदना,पीडा टेसू का काव्य है। इनके काव्य में वेदना अपनी संपूर्ण गरिमा और गहराई को लेकर प्रकट हुई है। हिंन्दी साहित्य की कवियित्रियों में तो महादेवी का स्थान सर्वश्रेंष्ठ है ही साथ ही इनमे आधुनिक रहस्य वाद तथा छायावाद की सभी प्रवृत्तिया अत्यंत सुंदर रुप में मिलती है। प्रकृति को इन्हौंने अत्यन्त सहानुभूति की दृष्टि से देखा है। वह प्रिय इसलिए हो उठी है कि उसी के माध्यम से इन्हौंने प्रियतम की झलक पायी है और अभिन्न इसलिए कि वह प्रेम के भावोद्दीपन में सहायक रही है। प्रकृति में महादेवी जी ने आधिकत्तर ऐस्वर्यमयी दृष्टि डाली है–– चाँदी की किरणें,मोती से तारे ,मोती से ओस की बूँदे मोती सी रातें,नीलम के बादल,इन्दुमणि जैसे जुगनू इसी प्रकार स्वर्ण पराग सी सांध्यगगन की लालिमा उनके अनुसार छायावादी कवि प्रकृति में अपने ही ऱ्हदय के सौंदर्य का प्रतिबिम्ब देखता है। वे साहित्यकार की आस्था में कहती है – ''छायावाद ने मनुष्य के ऱ्हदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिए,जो प्राचिनकाल में बिम्ब प्रतिबिम्ब के रुप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुल कित जान पड़ती थी। प्रकृति का उद्यीपन रुप की परंपरा प्राचीन है। महादेवी जीने अपनी निजी अनुभूतियों एवं भावना को अभिव्यक्ति के लिए तद्नुकूल पृष्ठ भूमि का निर्माण प्रकृति के माध्यम से किया है –

निशा को धो देता राकेश
चाँदनी में जब अलकें खोल,
कली से कहना था मधुमास
बता दो मधु मंदिर का मोल,
झटक जाता था पागल बात
धुली में तुहिन कणों के हार
सिखाने जीवन का संगीत
तभी तुम आये थे इस पार।

कवयित्री एक तरफ संसार को नस्वर रुप से देखती तो दूसरी ओर जग के मादकता के प्रति आकर्षित है। प्रकृति के सौंदर्य से अभिमण्डित देख कर उनके मूंह से बरबस निकल पडता है कि संसार बिम्ब कितना मादक है –

''तब कलियाँ चुपचाप उठाकर
पल्लव से घुंघट सुकुमार
छलकी पलकों से कहती है,
कितना मादक है संसार।''

इस तरह महादेवी वर्मा जी ने अपने काव्य के माध्यम से प्रकृति का चित्रण किया है।

निष्कर्ष – इस तरह से हम देख सकते है की,छायावादी काव्य में प्रकृति का चित्रण करने का काम इन कवियों के माध्यम से किया गया है।इन कवियों के काव्य में,वैयक्तिकता,सौंदर्यबोध,नारी चित्रण,रहस्यानुभूती,वेदना और निराशा,देशप्रेम,मानवतावाद,बौध्दिकता यह विशेषताएँ होने के बावजूद इन कवियों का मुख्य उद्येंश प्रकृति – चित्रण यही रहा है। प्रकृति चित्रण यह एक प्रमुख प्रवृत्ति इस काल की रही है। इन चारो कवियों ने प्रकृति का चित्रण अपने –अपने तरीके से किया है।

संदर्भ ग्रंथ – 1)हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ शिवकुमार शर्मा

2)आधुनिक कवि – विस्वम्भर मानव डॉ रामकिशोर शर्मा

3)हिंन्दी एवं मराठी प्रगतिशील कविता – राष्ट्रीय संगोष्ठी – बलभीम महाविद्यालय,बीड

4)हिंदी साहित्य का इतिहास–यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ नाशिक

5)हिंदी की प्रगतिशील कविता – डॉ सलमा खान